

डॉ. डेव मैथ्यूसन, रहस्योद्घाटन, व्याख्यान 3, हेर्मेनेयुटिक्स - रहस्योद्घाटन की व्याख्या

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक की व्याख्या के लिए व्याख्याशास्त्र या सिद्धांतों पर सत्र 3 है।

इसलिए, हमने रहस्योद्घाटन की साहित्यिक प्रकृति के बारे में थोड़ी बात की है जहां तक तीन प्रकार की साहित्यिक शैलियों, एक सर्वनाश, एक भविष्यवाणी और एक पत्र से संबंधित है।

अब हम इस पर विचार करना चाहते हैं कि यह पुस्तक की व्याख्या करने के हमारे तरीके को कैसे प्रभावित करता है। जैसा कि ईडी हिर्श ने हमें याद दिलाया, अर्थ शैली-बद्ध है। वह अर्थ है, शैली अर्थ का संचार करती है।

शैली इस बात में अंतर लाती है कि साहित्य का एक टुकड़ा अर्थ का संचार कैसे करता है। तो, रहस्योद्घाटन का क्या अर्थ है? साहित्यिक प्रकारों के आलोक में यह किस प्रकार अर्थ संप्रेषित करता है? या अब हम जो करने जा रहे हैं वह यह पूछना है कि पुस्तक को पढ़ने और उसकी व्याख्या करने में हमें किन सिद्धांतों का मार्गदर्शन करना चाहिए। सबसे पहले, मैं कभी-कभी इन सिद्धांतों को विशिष्ट साहित्यिक शैलियों के साथ सहसंबंधित करूंगा, हमेशा नहीं, लेकिन कभी-कभी मैं ऐसा करूंगा।

उम्मीद है कि अधिकांश समय वे साहित्यिक प्रकार की हमारी चर्चा से स्पष्ट होंगे। लेकिन सबसे पहले, हमें रहस्योद्घाटन की व्याख्या प्रतीकात्मक रूप से करनी चाहिए न कि शाब्दिक रूप से। और फिर, यह तुरंत सामने आता है, विशेष रूप से यह सर्वनाश के रूप में अपनी प्रकृति से सामने आता है।

हमने कहा कि सर्वनाश की साहित्यिक शैली का हिस्सा यह है कि जॉन ने अपनी दृष्टि को प्रतीकात्मक रूप में देखा और फिर प्रतीकों और छवियों का उपयोग करके लिखा जो जितना संभव हो उतना करीब से मिलता जुलता था जो उसने देखा था। इसलिए, हमें रहस्योद्घाटन की व्याख्या प्रतीकात्मक रूप से करने की आवश्यकता है न कि शाब्दिक रूप से। जब मैं चर्च के संदर्भ में बड़ा हो रहा था, जिसमें मेरा पालन-पोषण हुआ, तो मुझे मेरे माता-पिता ने इतना नहीं सिखाया, बल्कि चर्च के संदर्भ और परंपरा से, जहां मेरा पालन-पोषण हुआ, उनमें गहरा उत्साह और गहरी रुचि थी, यदि रहस्योद्घाटन की पुस्तक में, बिल्कुल जुनून नहीं।

मुझे सिखाया गया था कि आपको रहस्योद्घाटन को अक्षरशः पढ़ना चाहिए और इसकी शाब्दिक व्याख्या करनी चाहिए, जब तक कि ऐसा न करने का वास्तव में कोई अच्छा कारण न हो, जब तक कि प्रतीकात्मक रूप से इसकी व्याख्या करने का कोई अच्छा कारण न हो। मेरा सुझाव है कि हमें उस सिद्धांत को उल्टा करने की आवश्यकता है और कहें कि हमें रहस्योद्घाटन की प्रतीकात्मक रूप से व्याख्या करने की आवश्यकता है जब तक कि पाठ में इसे किसी अन्य

तरीके से व्याख्या करने का कोई अच्छा कारण न हो, उदाहरण के लिए, शाब्दिक रूप से। रहस्योद्घाटन की शाब्दिक विशेषताएं हैं, कभी-कभी अध्याय 4 से 22 में, जॉन के काम के दूरदर्शी या सर्वनाशकारी हृदय की तरह, इसका दूरदर्शी खंड।

आपको अक्सर राष्ट्रों और लोगों का संदर्भ मिलता है, जाहिर है, मुझे लगता है कि इसे शाब्दिक रूप से लिया जाना चाहिए, लेकिन जब तक ऐसा न करने का कोई अच्छा कारण न हो, मुझे लगता है कि हमें जॉन के प्रतीकों की गंभीरता से व्याख्या करनी चाहिए और उन्हें शाब्दिक रूप से नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक रूप से व्याख्या करनी चाहिए। हालाँकि हमने देखा है कि रहस्योद्घाटन की व्याख्या में, प्रतीक वास्तविक व्यक्तियों और स्थानों और घटनाओं को संदर्भित करते हैं, लेकिन एक राजनीतिक कार्टून की तरह, यह उन घटनाओं का वर्णन अत्यधिक कल्पनाशील, अत्यधिक प्रतीकात्मक, अत्यधिक रूपक तरीके से करता है, शाब्दिक रूप से नहीं। यह इसका वर्णन इस प्रकार करता है ताकि आपको बात समझ आ जाए।

तो, एक उदाहरण लेते हुए, थोड़ा आगे बढ़ने के लिए, हम कुछ चीजों के बारे में अधिक विस्तार से बात करेंगे जिनका मैं अगले एक घंटे में संक्षेप में उल्लेख करूंगा, लेकिन उदाहरण के लिए, जब आप प्रकाशितवाक्य पढ़ते हैं अध्याय 13, पहले कई छंदों में आपको एक जानवर, सात सिर वाले जानवर से परिचित कराया जाता है, और उसका वर्णन लाल रंग के रूप में किया गया है और उसे एक भयानक और अजीब दिखने वाली कल्पना में वर्णित किया गया है। और हमने कहा कि सर्वनाश अक्सर ऐसा करता है। यह कभी-कभी भाषा को ऐसे तरीकों से जोड़ता है जो कम से कम हमारे लिए अजीब और कभी-कभी विचित्र होते हैं।

और अध्याय 13 में, आपको इस सात सिर वाले जानवर से परिचित कराया गया है जिसके सिर पर मुकुट हैं और वास्तव में एक अजीब दिखने वाला चरित्र है। अगर मैं पहली सदी का पाठक हूँ, तो सबसे अधिक संभावना है कि मैं इसे किससे जोड़ूंगा? मुझे विश्वास है कि पहले पाठकों ने उस जानवर को रोम या रोमन साम्राज्य से जोड़ा होगा, यौ शायद सम्राट ने स्वयं उस जानवर का प्रतिनिधित्व किया होगा या जानवर का प्रतीक बनाया होगा। तो, जॉन, मुद्दा यह नहीं है कि जॉन को किसी ऐसे जानवर की उम्मीद है या उसने उसे देखा है जो सचमुच इस तरह दिखता है।

और इसीलिए मुझे यह समस्याग्रस्त लगता है। यहां तक कि जो लोग रहस्योद्घाटन की व्याख्या करने का दावा करते हैं वे अध्याय 13 जैसे पाठ में सचमुच ठोकर खाते हैं, क्या उन्हें नहीं लगता कि वास्तव में ऐसा दिखने वाला कोई जानवर होने वाला है। उन्हें लगता है कि यह एक इंसान का प्रतिनिधित्व करता है।

यहां तक कि अगर वे सोचते हैं कि यह भविष्य का मसीह-विरोधी या ऐसा कुछ है, तब भी वे एक मानवीय आकृति की उम्मीद करते हैं, न कि शाब्दिक रूप से वास्तविक जानवर की तरह, जब मैं एक राजनीतिक कार्टून पढ़ता हूँ और मुझे एक अमेरिकी नागरिक और एक संयुक्त राज्य अमेरिका के नागरिक के रूप में देखता है, तो मैं एक राजनीतिक कार्टून पढ़ो और मुझे एक हाथी या गधा दिखाई देता है। मैं देश की राजधानी वाशिंगटन डीसी में जाकर कांग्रेस के आसपास किसी गधे या हाथी को घूमते हुए देखने की उम्मीद नहीं करता हूँ। मैं समझता हूँ कि वे राजनीतिक दलों की छवियां या प्रतीक हैं।

और उसी तरह, जानवर, मुझे विश्वास है कि पाठकों ने इसे रोमन साम्राज्य या शायद स्वयं सम्राट से जोड़ा होगा। रहस्योद्घाटन अध्याय एक, श्लोक 20, मुझे लगता है कि वास्तव में हमें कुंजी प्रदान करता है। और मुझे नहीं पता कि जॉन ने जानबूझकर ऐसा किया है, लेकिन जब आप इसे देखते हैं, तो यह कुंजी प्रदान करता है, मुझे लगता है, हम किताब के बाकी हिस्सों को कैसे पढ़ रहे हैं और हमें बाकी छवियों को कैसे पढ़ना है।

अध्याय एक में, जिसे हम बाद में देखेंगे, अध्याय एक में, यूहन्ना ने श्लोक नौ से शुरू करते हुए मनुष्य के पुत्र का उद्घाटन दर्शन किया है। और वह श्लोक 12 से शुरू करके कुछ विस्तार से वर्णन करता है। अध्याय एक में, श्लोक 12 में, जॉन कहता है, मैं आवाज़ देखने के लिए मुड़ता हूँ।

तो, जॉन, यहाँ पहले कुछ छंदों में एक आवाज़ है जो उससे बात कर रही है। फिर श्लोक 12 में, वह कहता है, मैं इस आवाज़ को देखने के लिए मुड़ता हूँ। जब मैं मुड़ा, तो मुझे सोने की सात दीवटें दिखाई दीं।

इसलिए इस बात का ध्यान रखें। और फिर वह कहता है, और दीवटों के बीच में मनुष्य के पुत्र जैसा कोई दिखाई देता था। उसने पैरों तक लम्बाई वाला लबादा पहना हुआ था और उसकी छाती पर एक सुनहरी पट्टी बंधी हुई थी।

उसका सिर और हाथ, या मुझे क्षमा करें, उसका सिर और बाल ऊन की तरह, बर्फ की तरह सफेद थे। उसकी आँखें आग से धधक रही थीं। उसके पैर भट्टी में चमकने वाले पीतल के समान थे।

और उसकी आवाज़ बहते पानी की आवाज़ जैसी थी। अब ये सुनो. उसके दाहिने हाथ में सात तारे थे, और उसके मुँह से तेज़ दोधारी तलवार निकलती थी।

उसका चेहरा सूर्य के समान अपनी पूरी चमक के साथ चमक रहा था। और फिर जॉन श्लोक 17 में कहता है, जब मैंने यह देखा, तो मैं उसके पैरों पर गिर पड़ा जैसे कि मर गया हो, जो दिलचस्प बात यह है कि यह एक सर्वनाशकारी दृष्टि की एक सामान्य प्रतिक्रिया थी कि द्रष्टा कमजोर हो जाएगा, लगभग बीमार हो जाएगा। और यहां जॉन फिर से मुंह के बल गिर जाता है, जिससे जॉन का सर्वनाशी दर्शन के साथ संबंध प्रदर्शित होता है।

लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप श्लोक 19 और 20 में देखें, विशेष रूप से 20 में, हम श्लोक 20, अध्याय एक के अंतिम श्लोक पर ध्यान केंद्रित करेंगे। जॉन को एक आवाज़ सुनाई देती है, जो शायद यीशु मसीह है, जो अब पुनर्जीवित प्रभु है, जिसका उसने अभी वर्णन किया है, उससे बात कर रहा है। और ध्यान दें कि श्लोक 20 में क्या होता है।

जो सात तारे तू ने मेरे दाहिने हाथ में देखे, और सात सोने के दीवटों का रहस्य यह है, वे सात तारे सात कलीसियाओं के दूत हैं, और सात दीवटें सात कलीसियाएं हैं। तो, क्या आप देखते हैं कि इस आवाज़ ने क्या किया है? या क्या आप देखते हैं कि पद 20 में यूहन्ना ने क्या किया है? उन्होंने प्रदर्शित किया कि दीवट और तारे वास्तव में किसी और चीज़ के प्रतीक थे। और मेरा मानना है

कि इसी तरह से हमें प्रकाशितवाक्य के बाकी हिस्सों को पढ़ना चाहिए, यह पूछने के लिए कि ये चीजें किसका प्रतीक हैं? हम थोड़ी देर में इसके बारे में थोड़ा और बात करेंगे।

लेकिन मैं इसका भी समर्थन करना चाहता हूँ, और मसीह के वर्णन पर फिर से ध्यान देना चाहता हूँ। यूहन्ना श्लोक 12 से 17 में मनुष्य के पुत्र के इस दर्शन को देखता है, और वह उसका वर्णन इस प्रकार करता है जैसे उसने एक वस्त्र पहना हुआ है, उसके सिर पर बाल हैं जो बर्फ की तरह सफेद हैं, उसकी आँखें धधकती हुई आग की तरह हैं, उसके पैर चमकते हुए कांस्य की तरह हैं, और उसकी आवाज़ ऐसी है गरजते हुए बहते पानी की तरह। उसके दाहिने हाथ में सात तारे हैं, और उसके मुँह से तेज़ दोधारी तलवार निकलती है।

यह वह यीशु नहीं है जिसे मैं देखना चाहता हूँ, और यह वह यीशु नहीं है जिसके बारे में आप सुसमाचारों में पढ़ते हैं। मुद्दा यह है कि जॉन वस्तुतः यीशु का वर्णन नहीं कर रहा है। वह यीशु के बारे में कुछ कहने के लिए छवियों और प्रतीकों का उपयोग कर रहा है।

बाद में, हम देखेंगे कि उसके मुँह से निकलने वाली तलवार संभवतः यीशु के न्याय का प्रतीक है। वह बस अपनी बात कहता है। वह राष्ट्रों और लोगों और दुष्ट मानवता और यहां तक कि उसके चर्च का भी न्याय करता है जब वे उसकी आज्ञा मानने से इनकार करते हैं और उसके प्रति विशेष निष्ठा रखते हैं।

इसलिए, पहला अध्याय, मुझे लगता है, एक संदर्भ प्रदान करता है कि हमें जॉन के बाकी सर्वनाश और उसकी बाकी दृष्टि को प्रतीकों और छवियों को गंभीरता से लेते हुए कैसे पढ़ना है, शाब्दिक रूप से नहीं, बल्कि कुछ स्थानों के प्रतीकों और रूपक चित्रण के रूप में। और घटनाएँ। हम इसके बारे में थोड़ा और बात करेंगे। कठिनाई यह है कि जॉन हमारे लिए ऐसा कहीं और नहीं करता।

अध्याय 17 में एक और जगह है जहां कुछ प्रतीकों की व्याख्या की गई है, लेकिन इससे हमें कोई खास मदद नहीं मिलती। हम तब देखेंगे जब हम अध्याय 17 पर पहुंचेंगे। लेकिन, प्रकाशितवाक्य अध्याय 1 में, जॉन हमें एक संकेत देता है कि कुछ प्रतीकों की व्याख्या कैसे की जाए जो उनमें से बाकी की व्याख्या करने के लिए एक मॉडल प्रदान करते हैं, लेकिन समस्या यह है कि जॉन नहीं करता है ऐसा कहीं और न करें।

तो, हम इन प्रतीकों का अर्थ कैसे समझ सकते हैं, और हम यह कैसे पता लगा सकते हैं कि वे वास्तव में क्या संदर्भित कर सकते हैं? कौन से व्यक्ति, स्थान और घटनाएँ? मुझे लगता है कि पहली बात यह है कि रहस्योद्घाटन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और परिस्थितियों को समझना है, यही कारण है कि हमने शुरुआत में कुछ समय रोमन साम्राज्य, सम्राट और चुनौतियों के बारे में बात करने में बिताया। ईसाइयों के लिए बनाया गया। इससे हमें फिर से यह समझने में मदद मिल सकती है कि शायद यह जानवर इस बात को पढ़ने वाले पहली सदी के ईसाइयों के लिए रोम या रोमन साम्राज्य का सबसे अधिक प्रतिनिधित्व क्यों करता है। रहस्योद्घाटन में अन्यत्र, मुझे लगता है कि हमारी अधिकांश मदद यह समझने से होगी कि जॉन को ये छवियां कहां से मिलती हैं।

उनमें से अधिकांश, जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, सीधे पुराने नियम से आते हैं। जैसा कि सर्वविदित है, और कभी-कभी हम ऐसा करने में थोड़ा समय व्यतीत करेंगे। अन्य समय में, हम केवल जल्दी ही जा सकते हैं।

लेकिन, जैसा कि सर्वविदित है, जॉन कभी भी पुराने नियम को उद्धृत नहीं करता जैसा कि आप पाते हैं, उदाहरण के लिए, मैथ्यू में जैसा लिखा है, या इस प्रकार पैगंबर कहते हैं, या जैसा भविष्यवक्ता यशायाह में लिखा या भविष्यवाणी की गई थी, या ऐसा कुछ। इसके बजाय, जॉन पुराने नियम से भाषा और चित्र लेता है और उन्हें अपने प्रवचन में बुनता है। और इसलिए, पीछे जाकर और पुराने नियम की पृष्ठभूमि और इन छवियों के स्रोत को समझकर, हम अक्सर उनके अर्थ को बेहतर ढंग से समझने में सक्षम होते हैं, और कभी-कभी वे वास्तव में क्या संदर्भित कर रहे होते हैं।

लेकिन दूसरा स्रोत यह है कि, मुझे यह भी विश्वास है कि जॉन की बहुत सारी छवियां ग्रीको-रोमन पृष्ठभूमि से मेल खाती होंगी। अर्थात्, कुछ साहित्य, कुछ भाषा, कुछ छवियां जो ग्रीको-रोमन दुनिया के लेखकों से परिचित रही होंगी, और ग्रीको-रोमन साहित्य से, जॉन उन छवियों का उपयोग यह वर्णन करने के लिए कर सकते हैं कि उन्होंने क्या देखा कुंआ। वास्तव में, मैं कई बार आश्चर्य हुआ हूं, और हम इसे देखेंगे, कई बार जॉन छवियों का उपयोग कर सकते हैं क्योंकि वे एक से अधिक पृष्ठभूमि का विचारोत्तेजक हैं।

उसने जो देखा उसका वर्णन करने के लिए वह एक छवि या एक प्रतीक का उपयोग करना चुन सकता है क्योंकि यह न केवल पुराने नियम से आता है और पुराने नियम की यहूदी पृष्ठभूमि के साथ प्रतिध्वनित होता है, बल्कि इसमें पुराने नियम की पृष्ठभूमि के साथ समानताएं और प्रतिध्वनि भी है। ग्रीको-रोमन पृष्ठभूमि भी। तो, जो पाठक शायद पुराने नियम से परिचित हैं, लेकिन रोमन साम्राज्य और ग्रीको-रोमन समाज में अच्छी तरह से रचे-बसे हैं, वे शायद दोनों तरह से संबंध बनाने में सक्षम होंगे। इसलिए, मुझे आश्चर्य है कि क्या कभी-कभी जॉन ने जानबूझकर अपने कुछ प्रतीकों और छवियों को नहीं चुना क्योंकि वे एक से अधिक पृष्ठभूमि के विचारोत्तेजक थे।

कुंजी में से एक, और मुझे लगता है कि यह अपरिहार्य है, जॉन के कुछ प्रतीकों और छवियों को समझने और खोलने के तरीकों में से एक यहां है, यदि कभी भी, तो आपको बस अच्छी टिप्पणियों का उपयोग करने की आवश्यकता है। मैं ग्रेग बील और डेविड औने और ग्रांट ओसबोर्न की टिप्पणियों की सिफारिश करूंगा और यहां तक कि जॉर्ज केयर्ड की पुरानी टिप्पणी और रिचर्ड बाखम के कुछ कार्यों की भी सिफारिश करूंगा, जो कुछ छवियों की पृष्ठभूमि और उनके अर्थ को समझने के लिए अत्यधिक विश्वसनीय मार्गदर्शक प्रदान करते हैं। को देखें। वह आखिरी वाला सबसे कठिन है।

कभी-कभी यह निर्धारित करना बहुत मुश्किल होता है कि छवियां और प्रतीक वास्तव में कौन या क्या संदर्भित कर रहे हैं। मुझे आश्चर्य है कि कभी-कभी ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हमें प्रतीकों के अर्थ पर अधिक ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता होती है बजाय इसके कि वे वास्तव में क्या संदर्भित कर रहे हैं या वास्तव में वे क्या चित्रित कर रहे हैं। क्या जानवर वास्तव में संदर्भित करता

है या क्या हम आश्चर्य हो सकते हैं कि यह रोम या रोमन साम्राज्य को संदर्भित करता है या हम निश्चित नहीं हैं कि कौन सा है, साथ ही हम अभी भी जानवर का अर्थ समझ सकते हैं।

एक जानवर की छवि, जैसा कि हम देखेंगे, वास्तव में एक काफी लंबा इतिहास था जो पुराने नियम तक जाता है, जहां पुराने नियम का पाठ, आप इसे भजनों में पाते हैं, आप इसे भविष्यवाणी साहित्य में पाते हैं, जहां न केवल उत्पत्ति 3 में शैतान को चित्रित करने के लिए, बल्कि पूरे इतिहास में भगवान के लोगों को अक्सर चित्रित किया गया था, जिसका उपयोग दमनकारी, ईश्वरविहीन, मूर्तिपूजक विदेशी राष्ट्रों या शासकों को चित्रित करने के लिए किया जाता था। और इसलिए, जॉन ने एक ऐसी छवि का उपयोग किया है जिसका वास्तव में अर्थ का एक लंबा इतिहास है जो यह अपने साथ लाता है। जॉन इसे केवल हवा से नहीं खींचता है, बल्कि जॉन एक ऐसी छवि का उपयोग करता है जिसका दुष्ट, ईश्वरविहीन शासकों और दमनकारी राष्ट्रों का वर्णन करने का एक लंबा इतिहास है।

तो कम से कम, जब हम इसे पढ़ते हैं, तो हमें समझना चाहिए कि जानवर एक राष्ट्र, एक शासक, एक राज्य का प्रतिनिधित्व करता है जो हिंसक और दमनकारी और ईश्वरविहीन और मूर्तिपूजक है और भगवान और उसके लोगों का विरोधी है। लेकिन फिर, मुझे लगता है कि ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ, शायद हम थोड़ा और विस्तार से भर सकते हैं और संभवतः समझ सकते हैं, जिस संदर्भ में प्रकाशितवाक्य लिखा गया था, उसे देखते हुए, मेरे लिए यह सोचना मुश्किल है कि पहले पाठकों ने प्रकाशितवाक्य 12 नहीं पढ़ा होगा। , 13 और जानवर को रोमन साम्राज्य या स्वयं सम्राट का प्रतिनिधित्व करने या संदर्भित करने के रूप में, विशेष रूप से चूंकि इसका पुराने नियम में, राष्ट्रों और शासकों को भी संदर्भित करने का इतिहास है, जो भगवान के लोगों का विरोध करते हैं। लेकिन इसके अलावा, कभी-कभी मुझे लगता है कि हमें उन छवियों के अर्थ और धार्मिक महत्व पर अधिक ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है बजाय इसके कि वे वास्तव में क्या संदर्भित करते हैं और वास्तव में वे किस व्यक्ति या घटना या वास्तव में किस ओर इशारा कर रहे हैं और क्या संदर्भित कर रहे हैं। .

और कभी-कभी यह मुश्किल होता है। मुझे याद है एक बार, मैं कहानी का वर्णन करने के लिए इसे बताना चाहता था, कम से कम उस संघर्ष का वर्णन करने के लिए एक आंशिक सादृश्य के रूप में जिसका सामना हम तब करते हैं जब हम प्रकाशितवाक्य की छवियों और प्रतीकों की व्याख्या करते हैं। एक बार जब मैं मोंटाना में रह रहा था, एक पशुपालक ने एक दिन मुझे फोन किया और पूछा कि क्या मैं एक लॉग केबिन को तोड़ने में उसकी मदद करूंगा।

यह एक लॉग केबिन था जिसे 1930 के आसपास बनाया गया था। कुछ लकड़ियाँ, वर्षों से छोड़ दी गई थीं, लेकिन कुछ लकड़ियाँ अभी भी बहुत अच्छी, अच्छी स्थिति में हैं। और पशुपालक उन्हें अपना केबिन बनाने के लिए रखना चाहता था।

और इसलिए, कुछ उपकरणों या मशीनों और अपने नंगे हाथों की मदद से, हम इस केबिन को तोड़ने और अच्छे लॉग रखने जा रहे थे। जब हम ऐसा कर रहे थे, तो मैंने नोटिस करना शुरू कर दिया कि लट्ठों के बीच, जो शायद मोंटाना की ठंडी हवाओं से बचने के लिए छेदों और दरारों को

भरने के लिए भरे गए थे, मुझे अखबार मिले। और मैंने एक जोड़े को बाहर निकाला और उनकी ओर देखा।

वे 40 और 50 के दशक के थे, बहुत पहले से। और जिन चीजों ने मेरा ध्यान खींचा उनमें से एक राजनीतिक कार्टून थे। और मैंने उनमें से कुछ को देखा और मुझे एहसास हुआ कि मुझे पता नहीं था कि वे किस बारे में बात कर रहे थे।

नंबर एक, हालाँकि कुछ प्रतीकों को मैंने पहचान लिया, लेकिन कुछ ऐसे प्रतीक भी हैं जिनसे मैं परिचित नहीं था। और दूसरा, मेरा 1940 या 1950 के दशक का राजनीतिक और ऐतिहासिक ज्ञान उस समय मुझसे छूट गया। और मैं बिल्कुल निश्चित नहीं था कि संयुक्त राज्य अमेरिका और दुनिया में क्या चल रहा था और राजनीतिक कार्टून में ये चित्र और प्रतीक संभवतः किस ओर इशारा कर रहे थे।

जब हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पढ़ रहे होते हैं तो हमारा सामना इसी प्रकार से होता है। नंबर एक, कुछ छवियाँ और प्रतीक हमारे लिए अपरिचित हैं जो जॉन और उसके पहले पाठकों से परिचित रहे होंगे। और दूसरा, हम उन सभी चीजों के बारे में पूरी तरह से निश्चित नहीं हैं जो चल रही थीं और बिल्कुल उन घटनाओं और व्यक्तियों और चीजों के बारे में जिनकी जॉन भविष्यवाणी कर रहा था या जिनके बारे में बात कर रहा था या उनका जिक्र कर रहा था या उनका वर्णन कर रहा था।

और इसलिए, मैं कहता हूँ कि मुझे लगता है कि हमें कुछ बेहतर टिप्पणियों पर भरोसा करने और पुराने नियम पर ध्यान देने की जरूरत है, ग्रीको-रोमन दुनिया के बारे में जितना संभव हो सके उतना जानने की जरूरत है ताकि जितना संभव हो उतना अच्छा करने की कोशिश की जा सके। सबसे अधिक संभावना यह है कि इन प्रतीकों और छवियों का यही मतलब था। धार्मिक दृष्टि से, वे क्या अर्थ बताना चाह रहे थे? और फिर, वे किसका उल्लेख कर सकते हैं? व्यक्ति, स्थान और घटनाएँ आज के पाठकों के साथ-साथ भविष्य में भी। तो, रहस्योद्घाटन की व्याख्या करने में यह पहला सिद्धांत है।

हमें इसकी व्याख्या प्रतीकात्मक रूप से करनी चाहिए, शाब्दिक रूप से नहीं। मैं यह कहना पसंद करता हूँ कि रहस्योद्घाटन एक आर्ट गैलरी में घूमने और कभी-कभी एक ही घटना और स्थिति के विभिन्न कलात्मक चित्रण देखने जैसा है। यह किसी सीएनएन समाचार फ्लैश या डॉक्यूमेंट्री को देखने से कहीं अधिक वैसा है जिसे अधिक शाब्दिक, सीधा, ऐतिहासिक विवरण के रूप में पढ़ा जाता है।

रहस्योद्घाटन अधिक कलात्मक है, हाँ, यह वास्तविक घटनाओं, व्यक्तियों और स्थानों को संदर्भित करता है, लेकिन प्रतीक और रूपक की भाषा में उन्हें अधिक कलात्मक रूप से वर्णित करता है। और रहस्योद्घाटन को गंभीरता से लेने के लिए, शाब्दिक रूप से नहीं, बल्कि गंभीरता से, हमें इसके प्रतीकों और छवियों को गंभीरता से लेना चाहिए। रहस्योद्घाटन की व्याख्या करने में दूसरा सिद्धांत यह महसूस करना है कि रहस्योद्घाटन एक सर्वनाश के रूप में, एक

भविष्यवाणी के रूप में, और एक पत्र के रूप में संभवतः वर्तमान और भविष्य दोनों के बारे में होगा।

और कभी-कभी, शायद अतीत भी। मैं प्राथमिक रूप से कहूंगा, और कम से कम मैं कहूंगा कि सबसे बड़ा महत्व वर्तमान तत्व का होगा। अर्थात्, रहस्योद्घाटन मदद करने की कोशिश कर रहा है।

याद रखें, यह पाठकों को उनकी वर्तमान स्थिति को समझने में मदद करने का प्रयास कर रहा है। एक सर्वनाश के रूप में, यह वास्तविकता को उजागर करने की कोशिश कर रहा है ताकि वे उस अनुभवजन्य दुनिया के पीछे देख सकें जिसमें वे रहते हैं। एक बिल्कुल नई वास्तविकता है जो इसके पीछे छिपी है और किसी तरह इसे प्रभावित करती है, लेकिन पाठकों को उनकी स्थिति को और अधिक समझने में मदद करेगी।

इसलिए, मैं कहूंगा कि अधिकांश रहस्योद्घाटन संभवतः एक सर्वनाशकारी वर्णन और भविष्यसूचक वर्णन और रोमन साम्राज्य के तहत रहने वाले पाठक की पहली शताब्दी की स्थिति की आलोचना और मूल्यांकन है, जो फिर से एक और कारण है जिसके पीछे की ऐतिहासिक स्थिति को खोलने की कोशिश में हमने कुछ समय बिताया। रहस्योद्घाटन. लेकिन अधिकांश प्रकाशितवाक्य शायद पहली शताब्दी के वर्तमान व्यक्तियों और घटनाओं का वर्णन करता है, भले ही हम हमेशा निश्चित नहीं हो सकते कि वे वास्तव में क्या हैं। और कभी-कभी हम ही इसके बारे में अनभिज्ञ होते हैं।

रहस्योद्घाटन, सबसे महत्वपूर्ण बात, अपने पहले पाठकों को यह समझने और समझने में मदद करता है कि उन्हें अपनी वर्तमान स्थिति के प्रकाश में कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए। लेकिन स्पष्ट रूप से, रहस्योद्घाटन में भविष्य की घटनाएं शामिल हैं, खासकर जब आप अध्याय 19 और 22 तक पहुंचते हैं। आप स्पष्ट रूप से भविष्य में हैं जिसे धर्मशास्त्री ईसा मसीह का दूसरा आगमन कहते हैं, जहां हम पाते हैं कि इतिहास ईसा मसीह के आगमन या प्रवेश के साथ अपने समापन पर पहुंच रहा है। इतिहास और अब अपना राज्य स्थापित करने के लिए इतिहास के परिदृश्य पर पहुंचना।

एक भविष्यवाणी के रूप में और एक सर्वनाश के रूप में रहस्योद्घाटन वर्तमान को पूरे विश्व इतिहास के लिए भगवान के इरादे की व्यापक स्क्रीन पर पेश करता है। और यह भविष्य के न्याय और भविष्य के उद्धार को दर्शाता है, जैसा कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने किया था। इसलिए, पूरे प्रकाशितवाक्य में भविष्य के स्पष्ट संदर्भ हैं, लेकिन आम तौर पर, रहस्योद्घाटन अपनी वर्तमान परिस्थितियों को स्क्रीन के सामने या इतिहास को उसके निष्कर्ष तक लाने के भगवान के इरादे की व्यापक स्क्रीन की पृष्ठभूमि के खिलाफ रखकर ऐसा करता है।

फिर, यह पाठकों को उनकी वर्तमान स्थिति को बेहतर ढंग से समझने में मदद करने का हिस्सा है। लेकिन मुझे लगता है कि रहस्योद्घाटन का कम से कम एक उदाहरण है, विशेष रूप से अध्याय 4 से 22 में, भविष्यसूचक सर्वनाशी उचित खंड, हम कह सकते हैं, रहस्योद्घाटन का। अध्याय 12, 1 से 8 में, मुझे इसे पढ़ने दीजिए।

स्वर्ग में एक बड़ा और अद्भुत चिन्ह दिखाई दिया, एक स्त्री, जो सूर्य और चंद्रमा को अपने पैरों के नीचे पहने हुए थी और उसके सिर पर बारह सितारों का मुकुट था। और यदि आपको संदेह है कि रहस्योद्घाटन प्रतीकात्मक है, तो आपने कभी ऐसी महिला को कहाँ देखा है जिसके पैरों के नीचे बारह तारे और चाँद हो और सूरज से कपड़े पहने हों? स्पष्ट रूप से, जॉन, जो भी वह संदर्भित कर रहा है, वह इसे अत्यधिक प्रतीकात्मक भाषा में वर्णित कर रहा है। पद 2, वह गर्भवती थी और जब वह बच्चे को जन्म देने वाली थी तो वह दर्द से चिल्ला रही थी।

फिर स्वर्ग में एक और चिन्ह दिखाई दिया, एक विशाल लाल अजगर जिसके सात सिर, दस सींग और सात मुकुट थे। फिर, स्पष्ट रूप से, हम प्रतीकवाद और दूरदर्शी सामग्री के दायरे में हैं। उसकी पूँछ ने आकाश से एक तिहाई तारों को उड़ाकर धरती पर फेंक दिया।

अजगर उस स्त्री के सामने खड़ा हो गया जो बच्चे को जन्म देने वाली थी ताकि वह उसके बच्चे को जन्म लेते ही निगल जाए। उसने एक बेटे को जन्म दिया, एक नर बच्चा, जो लोहे के राजदंड के साथ सभी राष्ट्रों पर शासन करेगा, भजन अध्याय 2 का संकेत। और उसके बच्चे को भगवान और सिंहासन के लिए छीन लिया गया। बिना सोचे-समझे और इसे ईसा मसीह के जन्म के संदर्भ के रूप में देखे बिना इसे न पढ़ना लगभग असंभव है।

और मैंने जो भी टिप्पणियाँ पढ़ी हैं उनमें से लगभग हर टिप्पणी में इसे इसी तरह से पढ़ा गया है। तो यहाँ, कम से कम, अगर जॉन लिख रहा है, भले ही वह 60 के दशक में लिख रहा हो, अगर वह 90 के दशक के मध्य में लिख रहा हो, तो जॉन एक ऐसी घटना का जिक्र कर रहा है जो लगभग 90 साल पहले हुई थी। यानी उनका इशारा ईसा मसीह के जन्म की ओर ही है।

स्पष्टतः, जॉन के बहुत बाद के लेखन के परिप्रेक्ष्य से यह एक अतीत की घटना है। तो, कम से कम अध्याय 12 में, हमें भविष्य में नहीं, बल्कि अतीत में एक घटना का संदर्भ मिलता है। इसलिए, रहस्योद्घाटन को संभवतः घटनाओं और व्यक्तियों और स्थानों के संयोजन के रूप में पढ़ा जाना चाहिए और वर्तमान में, बल्कि भविष्य में भी होने वाली घटनाओं का चित्रण करना चाहिए।

और शायद कभी-कभी ऐसी घटनाएं भी होती हैं जो अतीत में घटित हो चुकी होती हैं। अब, इसका मतलब रहस्योद्घाटन की एक महत्वपूर्ण विशेषता है, फिर भी सिद्धांत संख्या दो के बारे में बात करते हुए, रहस्योद्घाटन वर्तमान और भविष्य के बारे में है और कभी-कभी शायद अतीत के बारे में भी, रहस्योद्घाटन को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण सिद्धांत रहस्योद्घाटन है, हालांकि इसमें एक तर्क है और एक प्रकार का, कम से कम शाब्दिक रूप से, एक रैखिक प्रगति है। ऐसा प्रतीत होता है कि रहस्योद्घाटन अस्थायी रूप से चक्रित होता प्रतीत होता है।

ऐसा लगता है कि यह एक चक्र की तरह अधिक कार्य करता है। यानी, बार-बार, रहस्योद्घाटन घटनाओं का वर्णन करके शुरू होगा, मुझे लगता है कि पहली शताब्दी में, पाठक को उनकी समकालीन स्थिति में इसे समझने में मदद मिलेगी। और फिर यह इतिहास के अंत, भविष्य, या फिर, जिसे धर्मशास्त्री ईसा मसीह का दूसरा आगमन कहते हैं, के संदर्भ में समाप्त होगा।

और फिर यह बैक अप लेगा और दोबारा ऐसा करेगा। यह वर्तमान का वर्णन करेगा और यह सीधे भविष्य के उद्धार और न्याय की ओर ले जाएगा। फिर लेखक फिर से बैक अप लेगा।

तो, यह उस समयावधि तक चक्रीय रूप से चलता रहता है जो संदर्भित करता है। तो, एक बार फिर, यह वर्तमान का वर्णन करके शुरू होगा और फिर उसे इतिहास को उसके निष्कर्ष तक पहुंचाने के ईश्वर के इरादे की पृष्ठभूमि में रखेगा। इसलिए, उदाहरण के लिए, अध्याय छह में, मैं केवल कुछ उदाहरणों का उपयोग करूंगा, लेकिन अध्याय छह में, अध्याय छह के बिल्कुल अंत में, हम इसे पढ़ते हैं।

पद 12 की शुरुआत, यह अध्याय छह है, मुहरों को दर्ज करता है, सात मुहरें जो टूट जाती हैं। और जैसे ही प्रत्येक सील खोली जाती है, कुछ घटित होता है। और यहीं पर आपके पास चार घुड़सवार हैं।

हम उसके बारे में और बात करेंगे. लेकिन अध्याय छह में सबसे अंतिम मुहर का वर्णन किया गया है, मुहर संख्या छह। यूहन्ना कहता है, जब वह छठी मुहर खोल रहा है, तो मैं देखता हूं, कि एक बड़ा भूकम्प हुआ।

सूर्य बकरी के बालों से बने टाट के समान काला हो गया। पूरा चंद्रमा रक्त से लाल हो गया और तारे और आकाश पृथ्वी पर गिर पड़े जैसे अंजीर के पेड़ से देर से अंजीर गिरे। फिर, सिद्धांत संख्या एक, लेखक अत्यधिक प्रतीकात्मक भाषा का उपयोग करते हैं।

हम इस बारे में बाद में बात करेंगे. तेज आँधी से हिले हुए अंजीर के पेड़ की नाई आकाश लुढ़कते हुए पुस्तक की नाई पीछे हट गया, और हर एक पहाड़ी द्वीप अपने स्थान से हट गया। तब पृथ्वी के राजा, हाकिम और सेनापति, धनी, पराक्रमी, और हर दास, और हर स्वतंत्र मनुष्य गुफाओं, चट्टानों और पहाड़ों के बीच छिप गए।

उन्होंने पहाड़ों और चट्टानों को पुकारा, कि हम पर गिर पड़ो, और हमें उसके साम्हने से जो सिंहासन पर बैठा है, और मेमे के कोप से छिपा लो, क्योंकि कोप का बड़ा दिन आ पहुंचा है, और वह खड़ा रह सकता है। हम बाद में देखेंगे कि जॉन वास्तव में तारों के गिरने और रक्त लाल चंद्रमाओं और गिरने वाले पहाड़ों और गुफाओं में छिपे लोगों की इस पूरी भाषा के लिए पुराने नियम के पाठ का उपयोग करता है। यह पुराने नियम से निकलता है।

लेकिन स्पष्ट रूप से, जॉन इस बिंदु पर अंतिम निर्णय का उल्लेख कर रहा है। यह ईसा मसीह का दूसरा आगमन है। यह इतिहास का अंत है।

तो, अध्याय छह हमें पहले ही अंत तक ले आया है। लेकिन जैसा कि आप जानते हैं, रहस्योद्घाटन में अभी भी हमारे पास 16 अध्याय और हैं। और इसलिए, हमारा काम पूरा नहीं हुआ है।

अध्याय सात. दोबारा, मैं इसे नहीं पढ़ूंगा, लेकिन अध्याय सात का अंत भगवान के लोगों के भगवान के सिंहासन के सामने खड़े होने और उनके अंतिम उद्धार, उनके युगांतिक मोक्ष का जश्न मनाने के साथ होता है। फिर भी, हमारे पास अभी भी 15 और अध्याय हैं।

अथवा अध्याय 11. अध्याय 11 भी इसी के साथ समाप्त होता है. श्लोक 15.

सातवें स्वर्गदूत ने तुरही बजाई। यह मुहरों के बाद अब तुरहियों की श्रृंखला के अंत में है। सातवें स्वर्गदूत ने तुरही बजाई।

स्वर्ग में ऊंचे स्वर से कहने लगे, जगत का राज्य अब हमारे प्रभु और उसके मसीह का हो गया है, और वह युगानुयुग राज्य करेगा। और फिर भगवान के सामने सिंहासन पर बैठे 24 बुजुर्गों में से एक ने उनके चेहरे पर गिरकर भगवान की पूजा की, वगैरह-वगैरह। स्पष्ट रूप से, फिर से, हम अंत में हैं जहां राज्य अब भगवान का राज्य बन गया है और वह अब हमेशा-हमेशा के लिए शासन करेगा।

स्पष्टतः, हम फिर से इतिहास के अंत पर हैं। फिर भी रहस्योद्घाटन में हमारे पास अभी भी 11 और अध्याय हैं। अध्याय 14 अंतिम मोक्ष और अंतिम न्याय दोनों की छवियां देता है।

फिर भी पुस्तक के अंत तक पहुँचने से पहले हमें अभी भी कई और अध्याय पढ़ने हैं। तो, रहस्योद्घाटन बार-बार आपको कगार पर लाता है, अंत तक, केवल फिर से शुरू करने के लिए और आपको अंत तक लाने और फिर से शुरू करने के लिए एक और दौड़ देता है। तो, आपके पास जॉन की साइकिल चलाने का यह पैटर्न है जहां फिर से, वह छवियों और प्रतीकों का उपयोग करके वर्णन करेगा।

वह वर्णन करेगा कि उसके पाठकों की स्थिति में क्या हो रहा है, पहली शताब्दी में क्या चल रहा है, उसके बाद ही इतिहास के अंत में जाकर यह दिखाएगा कि उन घटनाओं का संबंध कैसे है या भविष्य उन घटनाओं से कैसे संबंधित है। फिर वह बैक अप लेगा और इसे दोबारा करेगा और वह बैक अप लेगा और इसे दोबारा करेगा। लेकिन ऐसा लगता है जैसे वह अलग-अलग छवियों और विभिन्न प्रतीकों का उपयोग करके पाठक की स्थिति का अर्थ तलाश रहा है ताकि उन्हें फिर से मदद मिल सके कि वे क्या अनुभव कर रहे हैं।

और ये विभिन्न दृष्टिकोण उन्हें चित्र प्राप्त करने में मदद करने के लिए हैं। अब, फिर, इसका एक और प्रभाव है। तथ्य यह है कि लेखक आपको फिर से समर्थन करने के लिए अंत तक लाता है, ऐसा लगता है जैसे वह आपकी भूख बढ़ा रहा है।

आप अध्याय छह के अंत तक पहुँचते हैं और अंत का वर्णन कुछ हद तक अस्पष्ट और गूढ़ है। यह आपको बहुत कुछ नहीं बताता. और बार-बार, लेखक आपको फिर से शुरू करने और पहली शताब्दी में वापस जाने और अपने पाठक के दिन में चल रही घटनाओं का वर्णन करने के लिए अंत तक लाता है।

यह ऐसा है मानो लेखक भविष्य के न्याय और मुक्ति के पूर्ण प्रकटीकरण के लिए आपकी भूख बढ़ा रहा हो। और पाठक निराश नहीं है। जब आप अध्याय 19 और 22 पर पहुँचते हैं, तो लेखक सभी रुकावटों को दूर कर देता है और आपको वह सब देता है, जिसकी आप प्रतीक्षा कर रहे थे, एक पूर्ण प्रकटीकरण, ईसा मसीह के दूसरे आगमन का पूर्ण विवरण, जो होगा उसका भव्य समापन। ऐसा तब होता है जब मसीह अपने राज्य की स्थापना करने और एक नई सृष्टि का उद्घाटन करने, अपने लोगों को मोक्ष का पुरस्कार देने, लेकिन दुष्ट, दुष्ट मानवता पर अपने आगमन पर न्याय लाने के लिए वापस आता है।

इसलिए, सबसे पहले, रहस्योद्घाटन को प्रतीकात्मक रूप से मानें, और इसकी प्रतीकात्मक रूप से व्याख्या करें, शाब्दिक रूप से नहीं। इसे गंभीरता से लें, लेकिन शाब्दिक रूप से नहीं। यह वास्तविक व्यक्तियों, घटनाओं और स्थानों को संदर्भित करता है, लेकिन यह उन्हें अत्यधिक प्रतीकात्मक और रूपक भाषा में वर्णित करता है।

दूसरा, यह समझना कि रहस्योद्घाटन वर्तमान और भविष्य के बारे में है, और सबसे महत्वपूर्ण, शायद वर्तमान, पाठकों को उनकी वर्तमान स्थिति को समझने में मदद करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन भविष्य के बारे में भी, और कभी-कभी अतीत के बारे में भी। और फिर तीसरा, एक तीसरा सिद्धांत है, और मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है। रहस्योद्घाटन की व्याख्या कुछ ऐसी होनी चाहिए जो जॉन का इरादा हो और उसके पहली सदी के पाठक समझ सकें।

मुझे फिर वही बात कहना है। रहस्योद्घाटन की व्याख्याएं जॉन के इरादे के अनुरूप होनी चाहिए और उसके पहली सदी के पाठक क्या समझ सकते थे। यदि नहीं, तो मुझे लगता है कि ऐसी कोई भी व्याख्या जो संभवतः जॉन ने नहीं की होगी और उनके पहली शताब्दी के पाठक, जो पूर्व-तकनीकी युग में रह रहे हैं, हमारी स्थिति से बहुत अलग राजनीतिक स्थिति में रह रहे हैं, कोई भी व्याख्या जो वे संभवतः नहीं समझ सकते थे, उन्हें समझा जाना चाहिए। मेरी राय में, अस्वीकार कर दिया गया।

मेरा पालन-पोषण ऐसे माहौल में हुआ, चर्च के माहौल में भी, जो रहस्योद्घाटन को समझता था। मुझे लगता है कि हम रहस्योद्घाटन की हमारी चर्चा की बिल्कुल शुरुआत में वापस जा रहे हैं, जहां चर्च के इतिहास में अक्सर रहस्योद्घाटन की पुस्तक के प्रति जुनून होता था। मेरा पालन-पोषण लेफ्ट बिहाइंड सीरीज़ के समान माहौल में हुआ था, जहां मूल रूप से यह धारणा प्रतीत होती थी, हालांकि यह स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया था, कि आज तक, 20वीं या 21वीं सदी तक, किसी ने भी रहस्योद्घाटन को वास्तव में नहीं समझा था।

अब हमारे पास चाबी है। अब हम चारों ओर देख सकते हैं और इन सभी घटनाओं को पूरा होते और घटित होते हुए देख सकते हैं। अब हमारे पास रहस्योद्घाटन की व्याख्या करने की कुंजी है।

और इसलिए, कम से कम इसका परिणाम यह प्रतीत होगा कि किसी और ने इसे नहीं समझा है। पहली सदी के पाठकों को पता ही नहीं था कि क्या हो रहा है। दूसरी से 20वीं सदी तक चर्च के इतिहास में कोई अंदाज़ा नहीं था कि क्या हो रहा था।

और अब अचानक, उस माहौल में जहां मुझे प्रकाशितवाक्य पढ़ना सिखाया गया था, हमारे पास रहस्योद्घाटन को समझने की कुंजी है। हम चारों ओर देख सकते हैं और इन सभी चीजों को घटित होते हुए देख सकते हैं, और हम उन्हें पढ़ सकते हैं, और अब हम वास्तव में देख सकते हैं कि जॉन किसका उल्लेख कर रहा था और भविष्यवाणी कर रहा था और उसका अर्थ निकालने की कोशिश कर रहा था। जाहिर है, इस तरह का पढ़ना, मुझे लगता है, इस गलतफहमी पर निर्भर करता है कि सर्वनाश क्या है, और भविष्यवाणी क्या थी।

वे पहली शताब्दी से बात करने के लिए थे, न कि केवल भविष्य की भविष्यवाणी करने के लिए। लेकिन इस प्रकार का पढ़ना लगभग पूरी तरह से रहस्योद्घाटन को भविष्य की भविष्यवाणी के रूप में पढ़ने पर निर्भर करता है, न कि केवल कुछ वर्षों के भविष्य में, बल्कि सदियों दूर, पहले पाठकों और जो जॉन ने कभी भी कल्पना की थी, उससे भी कहीं आगे। लेकिन फिर, मुझे लगता है कि इसे ठीक करने की जरूरत है।

जाहिरा तौर पर, सिद्धांत यह था कि अब हमारे पास प्रकाशितवाक्य को पढ़ने की कुंजी है। पहली सदी के पाठकों के लिए यह एक पूर्ण रहस्य था। उसे उसके सिर पर उलट देना चाहिए।

मुझे लगता है कि पहली सदी के पाठक अच्छी तरह समझते थे कि क्या हो रहा था। और हम ही हैं जो अंधेरे में हैं। हम ही वो लोग हैं जिन्हें यह पता लगाने के लिए कड़ी मेहनत करने की जरूरत है कि जॉन इन पाठकों से क्या कहना चाहता है। सबसे अधिक संभावना है कि उन्होंने क्या समझा होगा? फिर से याद करें कि जॉन, रहस्योद्घाटन के सभी साहित्यिक प्रकारों की दिलचस्प विशेषताओं में से एक, एक सर्वनाश, एक भविष्यवाणी, एक पत्र, वे सभी लेखक के समकालीनों को कुछ बताने के लिए थे।

उनका अभिप्राय पाठकों की वर्तमान स्थिति के बारे में कुछ कहना था, न कि दूर भविष्य की कुछ घटनाओं की भविष्यवाणी करना। लेकिन उनका मतलब कम से कम था, हाँ, वे भविष्य की घटनाओं का उल्लेख करते थे, लेकिन साथ ही, वे वर्णन करने, समझाने और पाठकों की वर्तमान स्थिति पर एक परिप्रेक्ष्य प्रदान करने के लिए भी थे। और इसलिए, हमें रहस्योद्घाटन को पहली सदी के पाठकों के विशिष्ट मुद्दों और विशिष्ट समस्याओं को संबोधित करने के रूप में पढ़ना चाहिए, न कि अंधेरे में, सदियों बाद, पाठकों के परिप्रेक्ष्य की ऐतिहासिक सुरंग के नीचे कुछ शॉट के रूप में।

उदाहरण के लिए, इस तथ्य से परे कि जॉन ने तीन साहित्यिक विधाओं में लिखना चुना जो पाठक की अपनी स्थिति को संबोधित करते हैं, यह दिलचस्प है, नंबर एक, हमने पहले ही एक पत्र कहा था। एक पत्र के रूप में, जॉन ऐसी जानकारी संप्रेषित करने का प्रयास कर रहा था जो वास्तव में पॉल के किसी भी पत्र की तरह, पहली सदी के पाठकों की जरूरतों को संबोधित करेगी। और इसलिए, संभवतः, एक पत्र के रूप में, रहस्योद्घाटन ऐसी जानकारी संप्रेषित कर रहा है जिसे पहले पाठकों द्वारा समझा जाना था, न कि कुछ ऐसा जो समझ से बाहर था और जो केवल भविष्य में, पहली सदी के पाठकों के क्षितिज से बहुत परे हो रहा था। .

इसके अलावा, यह जानना दिलचस्प है कि जॉन ने अपनी पुस्तक का अंत कैसे किया। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का जो सन्दर्भ मैंने पहले पढ़ा था उनमें से एक भविष्यवाणी है। अध्याय 22 और श्लोक 10 में, जॉन को फिर से एक आवाज सुनाई देती है, संभवतः स्पष्ट रूप से एक देवदूत जो श्लोक 6 में और अध्याय 22 के बाद पीछे से उसे संबोधित कर रहा है।

अब श्लोक 10 में, स्वर्गदूत उससे क्या कहता है। तब उस स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, इस पुस्तक की भविष्यवाणी के शब्दों को बन्द न कर, क्योंकि समय निकट है। यह दिलचस्प है कि यह डैनियल की किताब में आपको जो मिलता है उसकी बिल्कुल विपरीत रणनीति है।

डैनियल की पुस्तक में, डैनियल को भविष्यवाणी को सील करने के लिए कहा गया है क्योंकि यह बाद के समय के लिए है। अब जॉन, और मुझे लगता है कि कुछ अन्य सर्वनाश भी पुस्तक को सील करने के इस विषय का उपयोग करते हैं। अब जॉन से ठीक उलटा कहा गया है, इसे बंद मत करो।

क्यों? क्योंकि यह किसी भविष्य के समय के लिए नहीं है। पूर्ति का समय पहले ही आ चुका है। यह आपके लिए है।

ये आपकी अपनी स्थिति बता रहा है। यह दूर के भविष्य की जानकारी नहीं है। यह उन घटनाओं की बात नहीं कर रहा है जो 20वीं या 21वीं सदी में घटित होंगी या इतिहास कितना भी लंबा चला हो।

इस भविष्यवाणी के शब्दों को सीलबंद न करें क्योंकि यह बाद के समय और पीढ़ी के लिए नहीं है। उन्हें सील न करें क्योंकि यह सीधे तौर पर पहली सदी के पाठकों के जीवन से संबंधित है। इसलिए, फिर से, कोई भी व्याख्या, चाहे वह वह हो जिसे हम लेकर आते हैं या वह जिसे हम पढ़ते हैं, कोई भी व्याख्या जिसका इरादा जॉन नहीं कर सकता था या उसके पहले पाठक जो पूर्व-तकनीकी युग में रह रहे थे, पहली शताब्दी में रह रहे थे, एक विशिष्ट राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक स्थिति के कारण, जो कुछ भी वे इरादा या समझ नहीं सकते थे, उसे संभवतः अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए।

कोई भी व्याख्या जॉन के इरादे के अनुरूप होनी चाहिए और उसके पाठकों ने क्या समझा होगा। फिर, यह दिलचस्प है। जब हम अन्य नए नियम की पुस्तकों के संदर्भ में सोचते हैं तो यह कोई नया सिद्धांत नहीं है।

फिर, हमें पॉल के पत्रों को इस आधार पर पढ़ना सिखाया जाता है कि पॉल किस स्थिति को संबोधित कर रहा था और वह अपने पाठकों से क्या कह रहा था। हमें रहस्योद्घाटन को उसी तरह पढ़ना चाहिए। और मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह केवल पहली सदी की घटनाओं का जिक्र है और यह केवल पहली सदी के लिए प्रासंगिक है।

हम बाद में देखेंगे कि इसकी कई छवियां और प्रतीक पहली सदी की स्थिति को भी पार करने की शक्ति और क्षमता रखते हैं और पूरी सदी में भगवान के लोगों से बात करना जारी रखते हैं, जब भी ईसा मसीह इतिहास को समाप्त करते हैं। लेकिन दिन के अंत में, हमें इस बात से शुरुआत

करनी चाहिए कि जॉन संभवतः अपने पहले पाठकों के लिए क्या करना चाहता था और उन्होंने संभवतः क्या समझा और क्या सीखा होगा। चौथा सिद्धांत यह है कि हमें प्रकाशितवाक्य को परमेश्वर के लोगों को प्रोत्साहित करने और प्रोत्साहित करने के इरादे से पढ़ना चाहिए।

इसने एक पीड़ित सताए हुए चर्च को प्रोत्साहन प्रदान किया, लेकिन इससे भी अधिक, इसने एक समझौतावादी और आत्मसंतुष्ट चर्च को प्रोत्साहन प्रदान किया। रहस्योद्घाटन की कोई भी व्याख्या जो मुख्य रूप से अपने पाठकों को कार्रवाई के एक निश्चित तरीके के लिए राजी करने, यीशु मसीह के प्रति अपनी निष्ठा के कारण पीड़ित लोगों को आराम प्रदान करने के उद्देश्य से इस पर ध्यान केंद्रित नहीं करती है या नहीं पढ़ती है, बल्कि उन लोगों को प्रोत्साहित और चेतावनी देती है जो अपने साथ समझौता कर रहे हैं। मसीह के प्रति निष्ठा या जो अपने परिवेश में इतने आत्मसंतुष्ट हैं कि वे जो कर रहे हैं उसके प्रति अंधे हैं। प्रकाशितवाक्य का कोई भी पाठ जो इसे केवल भविष्य की भविष्यवाणी के रूप में देखता है या 21वीं सदी में राजनीतिक स्थिति में क्या हो रहा है या ईसा मसीह की वापसी की निकटता के बारे में उत्साह बढ़ाने के लिए इसका उपयोग करता है, वह रहस्योद्घाटन के बिंदु से पूरी तरह से चूक गया है।

यह मुख्य रूप से भविष्य की भविष्यवाणी के बारे में नहीं है। हां, इसमें भविष्य के तत्व हैं, लेकिन यह मुख्य रूप से भविष्य की भविष्यवाणी के बारे में नहीं है। यह मुख्यतः प्रोत्साहन और उपदेश की पुस्तक है।

यह हमें जगाने और यह देखने के लिए है कि वास्तव में क्या दांव पर लगा है। यह परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर और मेरे की आराधना करने के लिए प्रेरित करने के लिए है, चाहे परिणाम कुछ भी हों। यह हमें याद दिलाने के लिए है कि कोई भी चीज़, कोई भी, कोई इकाई, कोई राष्ट्र, कोई व्यक्ति, कोई अन्य वस्तु उस विशिष्ट पूजा के योग्य नहीं है जो केवल ईश्वर और यीशु मसीह की है।

जॉन के शब्दों में, यह हमें इस बात के लिए प्रेरित करने की कोशिश कर रहा है कि मेम्ना जहाँ भी जाए, हम उसका अनुसरण करें, चाहे इसके परिणाम कुछ भी हों। रहस्योद्घाटन इसी बारे में है, मुख्य रूप से भविष्य की भविष्यवाणी करने के बारे में नहीं। इसका उद्देश्य हमारी जिज्ञासा को संतुष्ट करना नहीं है कि आगे क्या होने वाला है और हम अंत के संबंध में कहां स्थित हैं, बल्कि यह हमें किसी चार्ट पर हमारे अस्तित्व को दर्शाने में मदद करने के लिए है कि हम अंत के कितने करीब हैं।

लेकिन कोई भी जो प्रकाशितवाक्य पढ़ता है और मसीह के प्रति विशेष आज्ञाकारिता के लिए प्रेरित नहीं है, आगे की पवित्रता के लिए प्रेरित नहीं है, भगवान और मेमने की पूजा करने के लिए प्रेरित नहीं है, चाहे परिणाम कुछ भी हो, उसने अभी तक रहस्योद्घाटन को सटीक और स्पष्ट रूप से नहीं सुना है। अंत में, और मुझे लगता है कि शायद सबसे महत्वपूर्ण में से एक, रहस्योद्घाटन की व्याख्या करने के लिए विनम्रता की एक अच्छी खुराक की आवश्यकता होती है। हमें कभी-कभी यह स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए कि हम गलत हो सकते हैं या हमें यकीन नहीं है।

और हमें कम से कम रहस्योद्घाटन की पुस्तक को पढ़ने के अन्य तरीकों पर विचार करने और सुनने के लिए तैयार रहना चाहिए। रहस्योद्घाटन अंत समय की घटनाओं पर हठधर्मी निश्चितता के लिए जगह नहीं है या चीजें कैसे पूरी होंगी या जब मसीह इतिहास के लिए अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आएंगे तो चीजें वास्तव में कैसी दिखेंगी। रहस्योद्घाटन जैसी पुस्तक को पढ़ने में हठधर्मी दावे बिल्कुल अनुचित हैं।

इसके बजाय, ऐसा नहीं है कि हम किसी भी समय पुस्तक के अर्थ के बारे में निश्चित नहीं हो सकते हैं, ऐसा नहीं है कि हमें यह तय नहीं करना चाहिए कि हम ग्रंथों की व्याख्या कैसे करते हैं और उन पर पकड़ कैसे बनाते हैं और यहां तक कि कारण भी बताते हैं कि हम उन व्याख्याओं पर क्यों टिके हैं। लेकिन दिन के अंत में, हमें पुस्तक को अत्यधिक विनम्रता से देखना चाहिए, कुछ कठिनाइयों को पहचानना चाहिए जो पुस्तक की व्याख्या करने और पढ़ने की कोशिश करते हैं, और यह पहचानते हुए कि चर्च पूरे इतिहास में व्याख्या के कई बिंदुओं पर असहमत रहा है। और यहां, यदि कभी, फिर से, मैं यहां दोहराऊंगा, यदि कभी भी, हमें रहस्योद्घाटन को पढ़ने में मदद करने के लिए, मुझे लगता है, कुछ बेहतर टिप्पणियों पर भरोसा करने की आवश्यकता है।

जिन लोगों ने पुस्तक के बारे में सोचा है, जिन्होंने शोध किया है और पुस्तक को समझने का प्रयास किया है, वे प्रकाशितवाक्य जैसी कठिन पुस्तक के माध्यम से हमारे शिक्षक और हमारे मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकते हैं। इसलिए, प्रकाशितवाक्य को पढ़ते और उसकी व्याख्या करते समय उन पाँच सिद्धांतों को ध्यान में रखें। और जैसे-जैसे हम पुस्तक के माध्यम से आगे बढ़ेंगे, हम कभी-कभी इन सिद्धांतों का उल्लेख करेंगे।

और भले ही हम स्पष्ट रूप से ऐसा न करें, उम्मीद है, आप कभी-कभी कनेक्शन खींचने में सक्षम होंगे। फिर, नंबर एक, रहस्योद्घाटन की व्याख्या प्रतीकात्मक रूप से की जानी है, शाब्दिक रूप से नहीं। हां, यह वर्तमान और भविष्य में वास्तविक व्यक्तियों, स्थानों और घटनाओं को संदर्भित करता है, लेकिन यह प्रतीकात्मक रूप से उन्हें संदर्भित करता है।

इसलिए, हमें प्रकाशितवाक्य की छवियों और प्रतीकों को गंभीरता से लेना चाहिए, यद्यपि शाब्दिक रूप से नहीं। दूसरा, यह वर्तमान और भविष्य के बारे में है, संभवतः, और कभी-कभी अतीत के बारे में भी। तीसरा, यह होना चाहिए, कि रहस्योद्घाटन की कोई भी व्याख्या कुछ ऐसी होनी चाहिए जो जॉन का इरादा हो और उसके पहली सदी के पाठक समझ सकें और समझ सकें।

चौथा, रहस्योद्घाटन को मुख्य रूप से परमेश्वर के लोगों के लिए एक प्रोत्साहन और चेतावनी के रूप में पढ़ा जाना चाहिए। इसे उन लोगों के लिए एक प्रोत्साहन के रूप में पढ़ा जाना चाहिए जो पीड़ित हैं, लेकिन उन लोगों के लिए एक चेतावनी और जागृति के आह्वान के रूप में भी पढ़ा जाना चाहिए जो यीशु मसीह में अपने विश्वास से समझौता कर रहे हैं। और अंत में, रहस्योद्घाटन की हमारी व्याख्याएं और रहस्योद्घाटन का हमारा पाठ हमेशा विनम्रता की अच्छी खुराक के साथ होना चाहिए।

रहस्योद्घाटन की एक अन्य विशेषता जिसका मैं बहुत संक्षेप में वर्णन करना चाहता हूँ, नंबर एक से संबंधित, इस तरह का एक भ्रमण जो सिद्धांत नंबर एक पर वापस जाता है, हमें पुस्तक की प्रतीकात्मक रूप से व्याख्या करने की आवश्यकता है न कि शाब्दिक रूप से, यह तथ्य है कि अन्य छवियों के बीच और प्रतीक, और जब हम रहस्योद्घाटन की पुस्तक के माध्यम से काम करते हैं तो हम उनसे निपटेंगे, लेकिन रहस्योद्घाटन में आपको जो दिलचस्प चीजें मिलती हैं उनमें से एक यह है कि यह संख्याओं से भरी किताब है। पूरी किताब में हमें हर तरह की अलग-अलग संख्याएँ और संख्याओं या अंशों के गुणज मिलते हैं, अलग-अलग समय अवधि के संदर्भ मिलते हैं, और रहस्योद्घाटन की किताब में अलग-अलग संख्यात्मक मान पाए जाते हैं, और जाहिर है, संख्या सात शायद वह है जो आगे बढ़ती है आपका दिमाग तुरंत. आप वास्तव में पुस्तक की शुरुआत में ही संख्याओं के महत्व से परिचित हो जाते हैं, जब अध्याय एक में, श्लोक 12 में, जॉन के मनुष्य के पुत्र के दर्शन में, वह मनुष्य के पुत्र को सात सुनहरे दीवट और सात तारे पकड़े हुए देखता है।

तो पहले से ही प्रकाशितवाक्य के पहले अध्याय में संख्या सात एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, और अध्याय दो और तीन में सात चर्च, जिनका वास्तव में पहले ही अध्याय एक में उल्लेख किया गया था, और फिर संख्या सात सात मुहरों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, सात कटोरे, या सात तुरहियाँ, सात कटोरे, और संख्या सात कुछ अन्य समय में आती है, अध्याय एक में भगवान की सात आत्माएँ, और अध्याय चार और पाँच भी। तो नंबर सात सबसे स्पष्ट उदाहरण है जो एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। और प्रश्नों में से एक यह है कि हमें प्रकाशितवाक्य में संख्याओं से कैसे निपटना चाहिए? दिलचस्प बात यह है कि मुझे कभी-कभी लगता है कि रहस्योद्घाटन के व्याख्याकार, जो कहीं और प्रतीकात्मक रूप से इसकी व्याख्या करने के इच्छुक हैं, फिर भी आमतौर पर सख्त शाब्दिकता के साथ संख्याओं को लेने पर जोर देते हैं।

अर्थात्, संख्याओं का वही अर्थ होता है जो वे कहते हैं। यदि लेखक सात के बारे में बात करता है, तो बिल्कुल सात या ऐसा ही कुछ होना चाहिए। और कभी-कभी वे पहचानते हैं, हाँ, इसका कुछ प्रतीकात्मक मूल्य है, लेकिन फिर भी, इसे उस संख्या के शाब्दिक संख्यात्मक मान के रूप में लिया जाना चाहिए।

तो, संख्या सात, हाँ, इसके प्रतीकात्मक अर्थ हो सकते हैं, लेकिन फिर भी हमें इसे शाब्दिक संख्या सात के संदर्भ के रूप में लेना चाहिए जिसका यह संदर्भ दे रहा है। मैं आपको सुझाव दूंगा कि हमारा व्याख्यात्मक सिद्धांत नंबर एक, प्रतीकात्मक रूप से व्याख्या करें न कि शाब्दिक रूप से, संख्याओं पर भी लागू होता है। रहस्योद्घाटन में संख्याएँ उनके शाब्दिक मूल्य या उनके शाब्दिक संख्यात्मक मूल्य के लिए नहीं हैं, बल्कि संख्याएँ इसलिए हैं क्योंकि वे प्रतीकात्मक रूप से क्या दर्शाते हैं और वे प्रतीकात्मक स्तर पर क्या सुझाव देते हैं।

इसलिए, मैं जो करना चाहता हूँ वह रहस्योद्घाटन के बारे में पाए जाने वाले कुछ प्राथमिक नंबरों पर संक्षेप में चर्चा करना है और उनके प्रतीकात्मक मूल्य क्या होने चाहिए। इसलिए, उदाहरण के लिए, हम संख्या साढ़े तीन से शुरू करेंगे जिसका शाब्दिक अर्थ प्रकाशितवाक्य में समय और आधा समय है, जिसे मूल रूप से साढ़े तीन साल के रूप में समझा जाता है। संभवतः साढ़े तीन या

साढ़े तीन साल की संख्या जो आपको अध्याय 11, 12, और 13 में मिलती है, रहस्योद्घाटन की पुस्तक के केंद्र में, आपको साढ़े तीन साल का संदर्भ मिलेगा।

पुनः, आपके कुछ अनुवादों में समय समय और आधा समय हो सकता है। साढ़े तीन वर्ष को संभवतः सात का आधा भाग ही समझा जाना चाहिए। सात पूर्णता और पूर्णता की संख्या है जिसे हम बस एक पल में देखेंगे।

सात पूर्णता और पूर्णता की संख्या है, साढ़े तीन उससे कम है। तो शायद जब लेखक साढ़े तीन साल की अवधि के बारे में बात करता है, तो वह साढ़े तीन साल यानी 360 दिन के बारे में बात नहीं कर रहा होता है। वह सांकेतिक रूप से साढ़े तीन का प्रयोग कर रहे हैं।

यह सात का केवल आधा हिस्सा है। यह सात से कम पड़ता है। मेरा मानना है कि साढ़े तीन का मतलब समय की एक गहन अवधि है जिसे कम कर दिया जाता है।

यह पूर्ण संख्या सात से बहुत कम है। यह उसका केवल आधा हिस्सा है। तो फिर, साढ़े तीन का शाब्दिक संख्यात्मक या लौकिक मान नहीं है।

साढ़े तीन का महत्व यह नहीं है कि समय की अवधि कितनी लंबी रहती है। महत्व यह है कि यह क्या दर्शाता है, और यह उसके बारे में क्या कहता है। समय की वह अवधि चाहे कितनी भी तीव्र क्यों न हो, वह स्थायी नहीं रहेगी।

यह सात से कम पड़ता है। दूसरी संख्या चार है। संख्या चार संभवतः संपूर्ण पृथ्वी का प्रतीक है, जैसा कि हम पृथ्वी के चार कोनों के बारे में कह सकते हैं।

इसलिए, जब भी आप संख्या चार देखते हैं, उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य चार और पांच में चार जीवित प्राणी, तो चार महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि वस्तुतः उनमें से चार हैं, लेकिन प्रतीकात्मक रूप से संख्या चार पूरी पृथ्वी को दर्शाती है। अब पूरा विश्व विचाराधीन है। संख्या छह शायद फिर से अपूर्णता का प्रतीक है।

यह संख्या सात से एक कम है। सात नंबर जिसे हम पहले ही देख चुके हैं वह पूर्णता और पूर्णता का प्रतीक है। तो फिर, इसका महत्व सात बार या सात घटनाओं की शाब्दिक संख्या नहीं है, बल्कि प्रतीकात्मक रूप से सात है, जो संभवतः उत्पत्ति एक और दो और सृष्टि के सात दिनों तक जाती है।

पूर्णता या पूर्णता के प्रतीक के रूप में सात का अंक महत्वपूर्ण है। संख्या 10, संख्या 10 और उसके गुणज। इसलिए, हम न केवल इन संख्याओं के बारे में बात कर रहे हैं बल्कि उनके गुणजों के बारे में भी बात कर रहे हैं।

संख्या 10 पूर्णता या पूर्णता का प्रतीक है। यह एक बड़ी गोल संख्या है जो 10 और उसके गुणकों की पूर्णता को दर्शाती है। संख्या 12, एक और महत्वपूर्ण संख्या है, संख्या 12, और इसके गुणज जैसे 144 या 144,000 या केवल संख्या 12 या यहाँ तक कि 12 और 12 को जोड़ने पर 24 भी।

संख्या 12 पुराने नियम में इज़राइल की 12 जनजातियों और नए नियम में 12 प्रेरितों के आधार पर बनाए गए ईश्वर के लोगों को दर्शाती है या उनका प्रतीक है। इसलिए, जब आप 12 या उसके गुणज देखते हैं, तो फिर, महत्व 12 की शाब्दिक संख्या नहीं है, बल्कि 12 का प्रतीक है। 12 भगवान के लोगों का प्रतीक है।

हम रहस्योद्घाटन में कई अंश भी पाते हैं, चाहे एक-चौथाई या आधा या एक तिहाई। फिर, भिन्न अपने सटीक गणितीय मान के लिए नहीं हैं, बल्कि भिन्न एक टुकड़े का प्रतीक हैं या जो आंशिक है या जो सीमित है। तो हम देखेंगे, उदाहरण के लिए, जब परमेश्वर मुहरबंद निर्णय और तुरही का निर्णय सुनाता है, तो अक्सर पृथ्वी के एक तिहाई हिस्से को नुकसान पहुँचता है या केवल पृथ्वी के एक चौथाई या आबादी के एक चौथाई हिस्से को नुकसान पहुँचता है।

फिर, इसका मतलब यह नहीं है कि हम यह पता लगाएं कि अभी कितने लोग जीवित हैं और फिर हम निर्णय के अधीन लोगों के रूप में एक चौथाई निकाल लें। फिर, मुद्दा इन संख्याओं का प्रतीकात्मक मूल्य है। टुकड़े किसी ऐसी चीज़ का संकेत देते हैं जो खंडित है, कुछ ऐसा है जो केवल आंशिक है, या कुछ ऐसा है जो अपने दायरे में सीमित है।

यही अंशों का महत्व है। इसलिए, मैं तब सुझाव दूंगा कि हम प्रकाशितवाक्य में संख्याओं की व्याख्या करें, न कि उनके शाब्दिक मूल्य के लिए, न उनके शाब्दिक गणितीय मूल्य के लिए, न ही उनके शाब्दिक लौकिक मूल्य के लिए, बल्कि हम संख्याओं की व्याख्या उनके प्रतीकात्मक मूल्य और अर्थ के लिए भी करें। इसलिए व्याख्यात्मक सिद्धांतों के बारे में थोड़ी सी बात करने के बाद, जो हमें व्याख्या में मार्गदर्शन करेंगे, अगले भाग में, हम प्रकाशितवाक्य अध्याय एक से शुरुआत करने जा रहे हैं, और हम जॉन के सर्वनाश, उनकी भविष्यवाणी के प्रत्येक खंड पर काम करना शुरू करेंगे। उनके पत्र, और प्रतीकों और छवियों के प्रति सतर्क रहें और उस प्रकार के साहित्य के प्रति सतर्क रहें जो हम पढ़ रहे हैं और यह हमारे पाठ की व्याख्या करने के तरीके में कैसे अंतर लाता है।

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक की व्याख्या के लिए व्याख्याशास्त्र या सिद्धांतों पर सत्र 3 है।